Dr. Nutissri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara

U.G. - IV

MJC - 05 : Western Philosophy

Locke - Source of Knowledge

लॉक के अनुसार ज्ञान के स्रोत

लॉक अनुभववादी ज्ञानमीमांसा का प्रतिपादन करता है। लॉक के अनुसार ज्ञान का मूल स्रोत अनुभव है। उसने अनुभव के अन्तर्गत संवेदन (Sensation) और स्वसंवेदन (Reflection) को ज्ञान का प्रमुख स्रोत माना है। आत्मा स्वभावत: ज्ञान से रहित होता है। संवेदन और स्वसंवेदन के द्वारा आत्मा में ज्ञान उत्पन्न होता है। बाह्य वस्तुएँ हमारी ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करती हैं। हमारी इन्द्रियाँ उद्दीप्त होकर आत्मा में जो कुछ प्रेषित करती हैं, उसे संवेदन कहते हैं। दूसरे शब्दों में, बाह्य वस्तुओं के प्रभावों से उत्पन्न उत्तेजना मानव-मस्तिष्क में पहुँचकर संवेदनों को उत्पन्न करती है। यहाँ पर लॉक ने मानव-बुद्धि में

संवेदनाओं की उत्पत्ति की प्रक्रिया का एक विवरण प्रस्तुत किया है। अत: उसका दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक है। संवेदनों के अतिरिक्त लॉक ने स्वसंवेदनों को अनुभव का दूसरा महत्वपूर्ण स्रोत माना है। स्वसंवेदन मन की आन्तरिक क्रियाओं का प्रत्यक्षीकरण है। आधुनिक मनोविज्ञान में इसे अंतर्निरीक्षण (Introspection) कहा जाता है। किन्तु लॉक का स्वसंवेदन इस अन्त-र्निरीक्षण की अपेक्षा अधिक व्यापक है क्योंकि इसके अन्तर्गत स्मृति, यौक्तिक प्रक्रियाएँ एवं प्रतिभान आदि भी सम्मिलित हैं। इसके द्वारा आत्मा में आन्तरिक क्रियाओं के प्रत्यय उत्पन्न होते हैं। मानव-मन में भय, क्रोध, सुख-दु:ख आदि की मन: स्थितियों का ज्ञान स्वसंवेदनों से ही होता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि संवेदनों के द्वारा आत्मा में बाह्य वस्तुओं के गुणों का ज्ञान होता है। इसी प्रकार मन की आन्तरिक अवस्थाओं का ज्ञान स्वसंवेदनों से होता है, जैसे- संदेह करना, विश्वास करना, तर्क करना इत्यादि। उदाहरण के लिए- मेरा मन बहुत दुखी है, वह प्रसन्न है, मैं अमुक विषय में संशय करता हूँ इत्यादि अनुभूतियाँ स्वसंवेदनों से

उत्पन्न होती हैं। लॉक के अनुसार संवेदन स्वसंवेदन का पूर्ववर्ती है, अर्थात संवेदन पहले होता है और स्वसंवेदन उसके बाद में होता है। आत्मा में ज्ञान की उत्पत्ति इन्हीं दो स्रोतों (संवेदनों एवं स्वसंवेदनों) से होती है। इससे स्पष्ट है कि लॉक के अनुसार ज्ञान के मूलतत्व अनुभवजन्य हैं। अनुभव के इन मूल तत्वों को ही ज्ञान की मूल इकाई कहा जा सकता है। लॉक इसे प्रत्यय (Idea) कहता है। लॉक ने प्रत्ययों को दो वर्गों में विभक्त किया है — प्रथम सरल प्रत्यय एवं द्वितीय जटिल प्रत्यय।

सरल प्रत्यय वे हैं जो संवेदनों और स्वसंवेदनों दोनों से प्राप्त होते हैं। ये सरल प्रत्यय चार प्रकार के होते हैं। कुछ सरल प्रत्यय किसी एक इन्द्रिय के संवेदन से उत्पन्न होते हैं, जैसे — सुगंध, मिठास, शीतलता का स्पर्श, ध्वनि के संवेदन आदि। एक से अधिक इन्द्रियों के संवेदनों से उत्पन्न होने वाले सरल प्रत्यय, जैसे — गति, विराम, आकार, विस्तार आदि के प्रत्यय चक्षु और स्पर्श इन दो प्रकार के संवेदनों से बने हैं। इसी प्रकार स्वसंवेदनों से उत्पन्न होने वाले प्रत्यय, जैसे — संशय करना, स्मरण

नाना, चिन्तन करना आदि हैं। इसके अतिरिक्त संवेदनों और स्वसंवेदनों के संयुक्त व्यापार से उत्पन्न होने वाले प्रत्यय भी उल्लेखनीय हैं। उदाहरण के लिए सुख-दुःख, शक्ति, सत्ता, एकता, अनुक्रम इत्यादि के प्रत्यय संवेदन और स्वसंवेदन दोनों से उत्पन्न होते हैं। लॉक के अनुसार ये चार प्रकार के प्रत्यय ही समस्त ज्ञान के घटक हैं। सरल प्रत्यय हमारी आत्मा के लिए प्रदत्त हैं। उनको ग्रहण करने के लिए आत्मा को सक्रिय होने की कोई आवश्यकता नहीं होती है। किन्तु आत्मा इन सरल प्रत्ययों को उत्पन्न नहीं कर सकता है। इन प्रत्ययों को उत्पन्न करने वाली संवेदनाएँ बाह्य वस्तुओं से आती हैं। इससे स्पष्ट है कि ये प्रत्यय हमारी आत्मा की उपज नहीं हैं। हमारा अनुभव ही इन प्रत्ययों का आधार है।

लॉक के अनुसार सरल प्रत्ययों को ग्रहण करने में आत्मा निष्क्रिय रहती है किन्तु जटिल या मिश्र प्रत्यय के निर्माण में आत्मा को सक्रिय होना आवश्यक हो जाता है। जटिल प्रत्ययों के निर्माण में आत्मा की सक्रियता छः स्तरों

से गुजरती है –

(1) ग्रहण (Perception)

(2) धारण (Retention)

(3) पृथक्करण (Discernment)

(4) तुलना (Comparison)

(5) संयोजन या मिश्रण (Composition)

(6) अमूर्तीकरण या नामकरण (Abstraction)

इस प्रक्रिया के द्वारा सरल प्रत्ययों के सर्वगत लक्षणों को ग्रहण करके और विशिष्ट लक्षणों का निराकरण करके सामान्य प्रत्ययों की रचना की जाती है। इसके बाद ही नामकरण संभव होता है। लॉक के अनुसार अमूर्तीकरण मनुष्य की एक मौलिक विशेषता है जो उसे पशुओं से पृथक करती है।

मिश्र प्रत्यय तीन प्रकार के हैं – पर्याय (Modes), संबंध (Relation) और द्रव्य (Substance)।

अतः स्पष्ट है कि अनुभव ही हमारे समस्त ज्ञान का मूल स्रोत है। यह अनुभव हमें संवेदन और स्वसंवेदन के द्वारा प्राप्त होता है। ज्ञान आत्मा का अनिवार्य गुण नहीं है बल्कि ज्ञान आत्मा

का आगन्तुक गुण है। ज्ञान आत्मा में अनुभव द्वारा उत्पन्न होता है। लॉक ने आत्मा को एक रिक्त कमरे के समान माना है जिसमें इन्द्रियों के द्वारा विशिष्ट विज्ञान प्रेषित किये जाते हैं। आत्मा रूपी 'अंधेरी-कोठरी' में अनुभवरूपी-सूर्य का ज्ञान रूपी-प्रकाश संवेदन और स्वसंवेदन-रूपी दो खिड़कियों में से होकर आता है और उसे आलोकित करता है। इस प्रकार लॉक के अनुसार हमारे समस्त ज्ञान का स्रोत अनुभव ही है।